# सर्वधर्मावलम्बियों प्रति आश्चर्यजनक किंतु सत्य कथन

हमारा उद्देश्य किसी भी धर्म के प्रति विरोधाभास या किसी की धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाना नहीं है, न ही हम किसी धर्म का पक्ष लेकर आपके समक्ष विचार रख रहे हैं; अपितु समस्त मानव जाति प्रति सर्व के कल्याणार्थ सबको एकता के सूत्र में बाँधने के लिए एकमेव तथ्य रख रहे हैं, जिसे आप पुरानी धारणा/परंपरा की जगह बुद्धि की दात जो समस्त प्राणी को ईश्वर प्रदत्त मिलती है, उसका प्रयोग करके समझें। सिर्फ़ मन का प्रयोग करेंगे तो अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ मानेंगे; लेकिन अगर बुद्धि का प्रयोग करेंगे तो सत्य को स्वीकार कर सकेंगे। वैचारिक स्वतंत्रता सभी का अधिकार है इसलिए विचार रखकर आपको एकता का मार्ग बता रहे हैं, उसको मानना या नहीं मानना, वो आपके विचार हैं।

भारत में अनेकता होते हुए भी एकता है ऐसे कहा जाता है; लेकिन ये सिर्फ़ बोलने के शब्द हैं, मानने के नहीं। जिसका प्रमाण है धर्म के प्रति सबसे ज़्यादा लड़ाई-झगड़े भारत में होते हैं; क्योंकि दुनिया में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ सर्व धर्म मौजूद हैं। आज हर धर्मवंशी अपने-अपने धर्म, धर्मपिता या धर्मग्रंथों को श्रेष्ठ बताने के लिए एक–दूसरे का रक्त-पात करने में भी पीछे नहीं हटते। एक छोटी-सी बात भी झगड़े का कारण बन जाती है, जिसका कारण है अनेक धर्म और अनेक धर्म के कारण स्थापित अनेक मतें, समाज, परम्पराएँ, नीति-नियम। ये धर्म, परम्पराएँ इत्यादि ईश्वर ने नहीं बनाई है, ना ही हर धर्म के ईश्वर अलग-2 होते हैं। क्या किसी धर्मग्रन्थ में किसी ने ये पढ़ा है- ईश्वर अपने धर्म को श्रेष्ठ बताने के लिए आपस में लड़ते हैं? जब वो भगवान कभी लड़ता नहीं तो उसके लिए आज हम हिन्दू-मुसलमान-सिक्ख-ईसाई आदि आपस में क्यों इतना विवाद और मत-भेद बनाकर दुनिया में अशांति बना रहे हैं। जिसका कारण है कि हमने ईश्वर को जाना ही नहीं है, ना जानने के कारण ही मत-भेद पैदा हुए हैं।

जैसे अनाथ बच्चों को मात-पिता की पालना नहीं मिलती है तो वो आपस में लड़ते-झगड़ते हैं, ऐसे ही आज सभी मनुष्य मात्र ईश्वर के स्वरूप को ना जानने के

कारण अनाथ ही हैं। जिसका प्रमाण है 2500 वर्ष से इतने पूजा-पाठ, यज्ञ-दान, हज-नमाज, प्रेयर, सत्संग गुरु वाणी इत्यादि कर्म करते हुए भी कोई ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सके। सभी सिर्फ़ भटक रहे हैं। जिन धर्मगुरुओं ने जो रास्ता बताया उसी परम्परा में चल रहे हैं और वो परम्परा ही धर्म बन गया है। हिन्दू परिवार में जन्म लेने वाला बालक पालना मुसलमान की लेता है तो इससे वो कोई अधर्मी नहीं बन जाता, ना ही ईश्वर उसको कोई दण्ड देता है; क्योंकि जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं, मनुष्य के कर्म उसको श्रेष्ठ बनाते हैं। आप किसी भी धर्म को मान्य करे ये जरूरी नहीं है; पर आप जो कर्म कर रहे हैं, वो कर्म ही आपके सुख-दुःख का कारण है, वो ही पाप-पुण्य बनाता है। भगवान कभी ऐसा कोई कर्म नहीं सिखाता, जो किसी प्राणी मात्र के लिए दुःखदाई या हिंसात्मक हो; क्योंकि सभी प्राणियों में रूह होती है- चाहे वो मनुष्य हो या जानवर या पशु-पक्षी या पेड़-पौधे। दूसरे के दुःख में खुश होना ये आसुरी/शैतानी/डेविल प्रवृत्ति है और अपने कष्ट को ना देखकर दूसरों को सुख देना ये देव/फ़रिश्ता/एंजिल प्रवृत्ति है।

सभी जानते हैं ईश्वर की दृष्टि में श्रेष्ठ कौन है और निष्कृष्ट कौन है? फिर भी परम्परागत बनाए हुए कर्मों को धर्म समझकर करते हैं। विचार भी नहीं करते- क्या गलत है और क्या सही? आज समय का बहुत महत्व है और मनुष्य धन कमाने में इतना व्यस्त है कि ईश्वर को जानने या पहचानने के लिए उसके पास समय नहीं है। ये सब बातें व्यर्थ लगती हैं, ना कोई सुनना चाहता है, कभी ये विचार करने का भी विचार नहीं आता है कि इतने मंदिर-मस्जिद-चर्च-गुरुद्वारों में चक्कर लगाने पर भी सुख-शांति जीवन में क्यों नहीं है। सुबह से शाम तक जानवरों की तरह कर्म करके धन अर्जित करने पर भी जीवन तनावग्रस्त क्यों है? जिसका कारण है अपने मूल स्वरूप को ही भूल गए हैं और दैहिक सुख ही सर्वोपरि हो गया है। चारों तरफ अन्धकार इतना छा गया है कि ज्ञान प्रकाश का दीपक भी नजर नहीं आ रहा है । आज दुनिया में मुख्य 10 धर्म हैं, सभी अपने अनुसार भगवान के रूप को समझते हैं और पूजते हैं; परन्तु ऐसे नहीं है कि भगवान कोई अलग-2 होता है। भगवान तो एक ही है, जो सभी धर्मों में मान्य है। ना ही हर धर्म के जन्नत/स्वर्ग/पैराडाइज़ या दोजख/नरक/हेल अलग-अलग है। आज अन्तरिक्ष या चंद्रमा तक मनुष्य जा चुका है, ना वहाँ कोई देवी-देवता

मिले ना स्वर्ग/जन्नत मिला है, ना ही नीचे कोई पाताल है, पृथ्वी के गर्भ में लावा/मिट्टी/पत्थर है इतना प्रमाणित होने पर भी हम शास्त्रों और धर्मग्रंथों के प्रति इतने अंधश्रद्धालु हैं, जो शास्त्र मनुष्यकृत हैं; जिन धर्म के ठेकेदारों ने अपने स्वार्थ के लिए नियम बनाए, समाज बनाई, शास्त्र बनाए और उन्हीं परम्पराओं पर चलने के लिए धर्मवंशी मजबूर हो गए हैं। ईश्वर ने अपनी पूजा याचना करने के लिए कोई नियम निर्धारित नहीं किए। न ईश्वर ने स्वाहा-2 बोलने वाले यज्ञ आदि करने जैसे व्यर्थ कर्म सिखाए, ना ही अल्लाह बहरा है जिस तक आवाज पहुँचाने के लिए लाउड स्पीकर लगाना पड़े, कबीरदास ने ही कहा है– "पत्थर पूजे हरि मिले तो मैं पुजूँ पहाड़, ता चड़ मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा भयो खुदाय।"

सभी जानते हैं भगवान सिर्फ़ दिल की सुनता है, सिर्फ़ सच्चाई देखता है; पूजा की विधि-विधान ढोल बजाना जो कर्म दूसरों को परेशान करें ऐसे कोई कर्म ईश्वर नहीं बताता। इसलिए आज तक कोई ईश्वर तक पहुँच ही नहीं सका, न उसको जान सका; क्योंकि सभी ने अपने स्वार्थ का रास्ता बताया और लोगों को भ्रमित किया। ईश्वर तो कहता- सिर्फ़ मुझे याद करो। याद करने के लिए किसी भी प्रकार का हंगामा या शोर-शराबा करने की जरूरत नहीं है, जिसका प्रमाण हर धर्म में है सभी ने ईश्वर को प्राप्त करने के लिए तपस्या की है, चाहे वो देवी-देवता हो, इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरुनानक आदि कोई भी हो, उनको साधना करते हुए दिखाया है। भगवान एक है, जिसका प्रमाण हर धर्म में उसकी मान्यता है। सिर्फ़ नाम-रूप अलग बता दिया है- हिन्दू 'निराकार ब्रह्म' कहते हैं, मुसलमान 'अल्लाह', क्रिश्चियन 'गॉडफादर', गुरुनानक ने भी कहा है- 'सद्गुरु ओमकार निराकार' और सभी धर्मपिताओं ने ऊपर की ओर इशारा किया है और कहा है- हम गॉड नहीं है, हम पैगम्बर हैं। वो निराकार इस सृष्टि पर आता है; क्योंकि वो यहाँ का रहने वाला नहीं है, वो शांतिधाम का रहने वाला है,

जहाँ सूरज, चाँद, सितारों का प्रकाश नहीं पहुँचता, जिसको हिन्दू 'परमधाम', मुसलमान 'अर्श', क्रिश्चियन 'सुप्रीम-अबोड' कहते हैं।

इस सृष्टि की आयु सिर्फ़ 5000 वर्ष है, जिसका प्रमाण है 5000 वर्ष से पुरानी हिस्ट्री या वस्तु नहीं मिली है। सही आयु ज्ञात ना होने के कारण अपने मत-मतानुसार लाखों-करोड़ों वर्ष बताते हैं, जिसका कोई प्रमाण नहीं है । ये 5000 वर्ष की सृष्टि स्वर्ग और नरक 2 समान भागों में विभाजित है, जिस स्वर्ग और नरक का गायन सभी धर्मों में है। पहले इस सृष्टि पर एक अखण्ड भूखंड था, जिसको शास्त्रों में "जम्बूदीपे भरतखंडे" भारतवर्ष, आर्यावर्ते कहा है। एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। जहाँ सिर्फ़ एकता, अखंडता, समानता थी; जिस धर्म की स्थापना भगवान ने की थी और वही पुरातन है और सभी उसी धर्म का अनुसरण करते थे। इसलिए मत-भेद, लड़ाई-झगड़ा नहीं था; लेकिन द्वैतवादी धर्मपिताओं में सबसे पहले इब्राहीम 2500 वर्ष पहले आया और आकर अपनी मत स्थापित की। जिन्होंने उन्हें माना वो इस्लामी कहलाने लगे और एक मत से दो मतों की शुरुआत हो गयी। ऐसे ही एक-2 करके और भी बुद्ध-क्राइस्ट आदि धर्मपिताएँ आए और अपना ज्ञान देने लगे, तो जो देवी-देवता सनातन धर्मी जो थे, एक रास्ते चल रहे थे, वो ही 10 रास्तों में विभक्त या कन्वर्ट हो गए। जिन्होंने धर्म स्थापन किया, वो धर्मपिता थे, कोई भगवान या भगवान का स्वरूप नहीं; लेकिन मनुष्यों ने उनको ही भगवान समझ लिया। जैसे क्रिश्चियन्स क्राइस्ट को भगवान जैसा स्वरूप मानते हैं; लेकिन वो क्राइस्ट ने अपनी 13 से 33 वर्ष की आयु भारत की काशीनगरी में भागवत और गीता पढ़ने में बिताई और जिस ज्ञान की अमूल्यता को समझकर अपने देश में जाकर उसी ज्ञान को अपने तरीके से बताया। कृष्ण जिसको वो अंदर से भगवान मानता था, कृष्ण चरित्र को अपने चरित्र के साथ मिलाप करने लगा और वो लोग क्राइस्ट के द्वारा बताई कृष्ण नीति पर चलने लगे, क्राइस्ट की मृत्यु क्रॉस पर चढ़ने से नहीं हुई, उनको क्रॉस पर लटकाया गया; पर अपने अनुयायियों के द्वारा वो स्वतंत्र होकर फिर से भारत में कश्मीर तक आए और कश्मीर

में आकर शरीर छोड़ा। आज भी क्राइस्ट की कब्र कश्मीर में मौजूद है। राजा के डर से इस बात का जिक्र तब नहीं किया गया कि क्राइस्ट को स्वतंत्र कर दिया है। जेरुसलम के धर्मगुरुओं ने समझा क्राइस्ट पैराडाइज़ चला गया तो क्राइस्ट के द्वारा कृष्ण नीति को क्रिश्चियनिटी कर दिया गया और भागवत और गीता से ली गयी बातों को बाईबल के रूप में ग्रंथ बता दिया गया; इसलिए बाईबल में लॉर्ड कृष्ण का नाम है और बाईबल में बताए क्राइस्ट के अधिकतर चरित्र कृष्ण से मेल खाते हैं। (प्रूफ-इण्टरनेट https://www.youtube.com/watch?v=gd_lrl1aiww/ /https://www.youtube.com/watch?v=aMyYW87Mt3U ) ऐसे ही हर धर्म की स्थापना की हिस्ट्री है; क्योंकि कोई भी धर्मपिता भगवान नहीं था, उनके अनुयायियों के द्वारा धर्मग्रंथ लिखे जिनमें मूल सत्य को दबा दिया है और रोचक कथाएँ बना दी हैं। ऐसी ही सबसे प्राचीन धर्म आदि सनातन देवी-देवता धर्म था, जिसकी स्थापना निराकार भगवान साकार मूर्त आदिदेव के द्वारा कराता है। जिसका गायन भी हर धर्म में है- मुसलमान उसको 'आदम' कहते हैं, क्रिश्चियन 'एडम' कहते हैं, जैनी 'आदिनाथ' कहते हैं। वही सभी मनुष्यों का पिता है और ईश्वर का साकार स्वरूप है; इसलिए एक आदिदेव महादेव शंकर का ही नाम शिव से जोड़ा जाता है| मुसलमानों में भी कहा है- "आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं। लेकिन खुदा के नूर से, आदम जुदा नहीं।।" जिसकी यादगार मूर्ति देश-विदेश में मिलती है, जितनी भी खुदाइयाँ हुई हैं, उसमें शिवलिंग ही प्राप्त हुए हैं, और कोई देवता या धर्मपिता की मूर्ति नहीं है, जो कि प्रमाण सहित है। सबसे पुरानी सभ्यता हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जहाँ खुदाई में शिवलिंग मिला है, जिससे पुरानी कोई सभ्यता नहीं मिली है।

मोहम्मद गजनवी ने भारत में जब आक्रमण करके मंदिरों का खंडन किया था, उस समय उत्तर प्रदेश-गोरखपुर में सरिया गाँव में एक शिवलिंग को वो तोड़ नहीं पाया तो क्रोध में आकर उस पर कलमा लिखवा दिया ताकि हिन्दू पूजा ना कर सके; परन्तु आज हिन्दू भी उसे पूजते हैं और मुसलमान आकर रमजान में इबादत करते हैं। है एक ही पत्थर; पर मान्यता अपने अनुसार करते हैं।

मुसलमान लोग हज यात्रा सम्पन्न तब मानते हैं जब मक्का में काबा के गोल काले पत्थर का चुम्बन करते हैं, जिसको 'संग ए असवद' कहा है। 'असवद' का अर्थ है जो सफ़ेद ना हो अर्थात् काला हो। काले पार्ट की यादगार शिवलिंग ही है, जिसको काले कलियुग में काले पत्थर के रूप में पूजते हैं। मक्का पहले मुक्तेश्वर या मक्केश्व शिव का ही मंदिर था। भविष्यपुराण में जिसका उल्लेख भी आया है –

"नृपश्चैवमहादेवं मरुस्थल निवासिनं !
गंगाजलेश्च संस्नाप्य पंचगव्य समन्विते :
चंद्नादीभीराम्भ्यचर्य तुष्टाव मनसा हरम !
इतिश्रुत्वा स्वयं देव: शब्दमाह नृपाय तं!
गन्तव्यम भोज राजेन महाकालेश्वर स्थले !! "

नृपश्चैवमहादेवं मरूस्थल निवासिनं!

गंगाजलेश्च संस्नाप्य पंचगव्य समन्वितेः

चंद्रादीभीराम्भ्यचर्य तुष्टाव मनसा हरम्!

इति श्रुत्वा स्वयं देवः शब्दमाह नृपाय तं!

गन्तव्यम भोज राजेन महाकालेश्वर स्थले!!

क्रिश्चियन धर्म में गॉड इज़ लाइट और गॉड इज़ ट्रुथ कहा जाता है, एक शिवलिंग ही है, जिसको ज्योतिर्लिंग कहा जाता है और महादेव को सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् भी कहा जाता है। क्रिश्चियन जो पहले यहूदी कहलाते थे, वो भी अग्नि को पूजते थे, लिंग भी सबसे पहले अग्नि के रूप में प्रकट हुआ था और अथर्ववेद में रुद्र को ही अग्नि कहा है। रुद्र सिर्फ़ महादेव को कहते हैं।

एक क्रिश्चियन देश भी है, जहाँ वेटिकन सिटी है, जहाँ खुदाई में शिवलिंग प्राप्त हुआ तो शहर का नक्शा ही शिवलिंग के आकार का बनाया गया। आज वो शिवलिंग म्यूज़ियम में रखा हुआ है।

क्रिश्चियन्स के द्वारा आज भी शिवलिंग की पूजा की जाती है और विदेशी धर्म खण्डों में शिवलिंग पाया भी गया है।

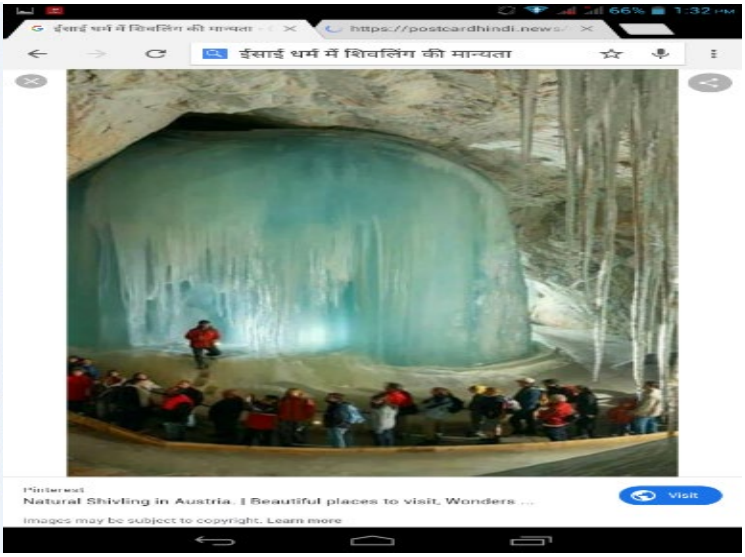


मिस्त्र नामक देश में असिरिस एवं आईसिस नामक शिवलिंग की पूजा होती है, असिरिस के मस्तक व गले में शिव के समान सर्प, हाथ में त्रिशूल तथा व्याधचर्म पहना हुआ है। एपीस नामक नंदी बैल पर सवार है। बिल्वपत्र जैसे पत्तों से इनकी पूजा की जाती है। मिस्त्र में मेम्पिस नामक प्रसिद्ध तीर्थधाम है जो हमारी काशी की तरह शिव का धाम है। उत्तरी अफ्रीका में अर्च जाति के लोग लिंग की ईश्वरोपासना करते हैं। यूनान (ग्रीस) में बेसक व प्रियेसस शिवलिंग की पूजा की जाती है। इटली के रोम में रोमन कैथोलिक ईसाई शिवलिंग की पूजा करते हैं। स्कॉटलैण्ड के ग्लासगों शहर में सोने के शिवलिंग की पूजा की जाती है। नार्वे एवं स्वीडन में भी शिवलिंग की पूजा की

जाती है। ऑस्ट्रेलिया एवं हंगरी में तंत्रिस्वक नामक लिंग की पूजा होती है। रूम असीरिया देश के विलननगर में 450 घन फुट का शिवलिंग है, जिसकी पूजा की जाती है। थाईलैण्ड में एकोनिस व ऐस्टरगैटीस नामक पत्थर के लिंग पूजे जाते हैं। इज्राइल में यहूदियों का एक प्रतिष्ठित शिवलिंग है, जिसे स्पर्श कर आज भी शपथ ली जाती है। जापान के आईसनगर में शिवलिंग की पूजा की जाती है। श्रीलंका में नियमित शिवलिंग की पूजा होती है। कजाकिस्तान के ताशकंद में सिविलियन लोग शिवलिंग पूजा करते हैं। अफगानिस्तान के चित्राल स्वाद बलख कोहेकाफ आदि स्थानों पर चंचशेर लिंग की पूजा की जाती है। हवाईद्वीप में लोग संकट के समय शिवलिंग की पूजा करते हैं। ईरान में ज्वालामय लिंग की पूजा की जाती है। ब्राजील में भगवान शिव तथा गणेश की पूजा की जाती है। पेरूदेश में मिट्टी शिवलिंग (पार्थिवेश्वर) पूजा जाता है। अमेरिका के पेम्बुकों शहर में गोल सरल द्विमुखी शिवलिंग है। अमेरिका में टेन्सी नगर में विशाल शिवलिंग पूजा जाता है। केनिया के नैराबी, मुम्बासाव जंजीबार में विशाल शिव मंदिर है। दक्षिणी अफ्रीकामेडा गास्करफीजी, मॉरिशस गुयाना व वैस्टइंडीज में श्रद्धा से अनेक मंदिरों में शिवलिंग पूजा की जाती है।

सम्पूर्ण विश्व में एक महादेव ही, जिसके निराकारी स्टेज की यादगार साकार मूर्ति मान्य है और पूज्य है। इतनी सार्वभौम मान्यता किसी और देवता की नहीं है। वही ईश्वर स्वरूप है जिसका प्रमाण एक शिवालय ही है जहाँ सभी धर्मावलम्बी जा सकते हैं और सभी उसकी पूजा कर सकते हैं; क्योंकि महादेव ही एक निष्पक्ष व्यक्तित्व है जो किसी से भी कोई भेदभाव नहीं करते हैं। वही विश्वपिता है और एक पिता के अंदर ही यह भावना हो सकती है। हम ये नहीं कहते आप मंदिर में जाकर शिवलिंग की पूजा करने लगें या हिन्दू धर्म को अपनाएँ। हिन्दू तो कोई धर्म नहीं है। धर्म तो आदि सनातन देवी-देवता धर्म है, जिसको 'अल्लाह अव्वलदीन' कहा जाता है, जिसकी दीन अर्थात धर्म की पुन: स्थापना के लिए वही आदिदेव महादेव/आदम/एडम आया हुआ है और आकर सिर्फ़ सच्चा ज्ञान दे रहा है; परन्तु आता भारत में ही है; क्योंकि सर्व धर्म भारत में ही मौजूद हैं; इसलिए सर्व धर्मों को पढ़ाने के लिए आध्यात्मिक विश्व विद्यालय की स्थापना करता है जिसमें हर वर्ग, धर्म, जाति, भाषा या किसी भी उम्र

का व्यक्ति बालक से लेकर वृद्ध तक भी यह मौखिक गीता ज्ञान पढ़ सकता है और पढ़ाई कोई दुनियावी पढ़ाई नहीं है, बहुत सहज है, जिसके लिए और कोई भी मानवरचित शास्त्र-ज्ञान की आवश्यकता नहीं है।

मुसलमानों में भी कहते हैं- कयामत के समय अल्लाह कब्रदाखिल आत्माओं को जगाएगा। अभी वही महाभारत प्रसिद्ध मूसलों (मिसाइल्स) की कयामत का समय आने वाला है और हम अपने मूल स्वरूप को भूलने के कारण मुर्दा समान सोए पड़े हैं। हम सोई हुई आत्माओं को जगाने ईश्वर आया हुआ है। हम अनेक धर्मों में भटके हुए हैं। वो खुदा आकर बताता है; क्योंकि खुदा को जानने से पहले खुद को जानना जरूरी है, वही बताता है- तुम देह नहीं, निराकार ज्योतिबिंदु आत्मा हो। देह समझने से तुम नीचे गिर गए हो। ये विनाशी देह तो सिर्फ़ वस्त्र है, जो हर जन्म में बदलता रहता है, तुम तो अविनाशी आत्मा हो। सिर्फ़ आत्मा का ज्ञान ही नहीं, उसका पिता कौन है और वो कैसे इस सृष्टि में आत्मलोक/अर्श/सोलवर्ल्ड से आता है, वो ऐसा तुरीया ज्ञान भी देता है। जो ज्ञान कोई कथा वाचक नहीं देता है, धारण करने योग्य है, जिसको धारण करने से जीवन में सच्ची स्वतंत्रता का अनुभव कर सकते हैं। ऐसा नया ज्ञान जो आज से पहले किसी ने नहीं दिया है। भविष्यवक्ताओं ने जिसके लिए भविष्य वाणी भी की है- सृष्टि पर महापुरुष का जन्म हो चुका है। तीन तरफ से सागर से घिरे देश में जन्म लेगा (नास्त्रेदमस 1555 शतक 10 श्लोक96) उस पर मुकदमा भी चलाया जायेगा। उससे लोग नफरत करेंगे/बाद में प्रेम भी करेंगे (नास्त्रेदमस शतक 1 श्लोक50) और । उसके द्वारा वैचारिक क्रांति होगी(गोपीनाथ शास्त्री)। जो आत्मा-परमात्मा के रहस्य को प्रगट करेगा (जुल्बर्ण)।

आप अपने-2 मान्यतानुसार ईश्वर को जानते हैं, उसी प्रकार जाने और अपने ही धर्म में रहकर ही बिना धर्म परिवर्तन किए भगवान के सच्चे स्वरूप को जान सकते हैं; क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान के ऊपर किसी एक धर्म का अधिकार नहीं होता है। आज तक इतनी भक्ति करने से कुछ मिला नहीं; क्योंकि उसके साकारी सो निराकारी असली स्वरूप को बिना जाने किया; इसलिए ईश्वर की साक्षात् पहचान जरूरी है और उसके लिए ज्ञान लेना अनिवार्य है; क्योंकि बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं मिलती। कहते हैं- 'ऋते ज्ञानान्न मुक्ति'... ज्ञान ही एक ऐसी चीज है, जिससे ईश्वर को जान सकते हैं। ईश्वर

कोई चमत्कार नहीं करता है, वो प्रकृति के नियम को नहीं तोड़ता। उसने आकर जो साक्षात् मुख से गीता ज्ञान दिया, उस ज्ञान की महत्ता को हर धर्म वाले मानते हैं, जिसमें भूल से कृष्ण उपासकों ने साकार कृष्ण का ही नाम डाल दिया, इसलिए आज वो सिर्फ़ हिन्दुओं का धर्मग्रंथ बनकर रह गया है; लेकिन वो कोई धार्मिक ग्रंथ नहीं अपितु जीवन परिवर्तक है। ये सभी जानते हैं- शास्त्र मनुष्य-कृत हैं; इसलिए ये बात आपको मिथ्या लगती है; परन्तु आप एकमात्र भगवान की गाई हुई भगवत-गीता का ही अध्ययन करें तो उसके श्लोकों से ही प्रमाणित है कि गीताज्ञान कलाबद्ध साकार कृष्ण के द्वारा नहीं; परन्तु साकारी सो निराकारी शिव+शंकर महादेव ने कलियुगान्त+सतयुगादि में दिया था। स्वार्थ पूर्ति और अज्ञान के द्वारा इस सत्य को दबा दिया है; परन्तु सत्य दब सकता है, नष्ट नहीं हो सकता है। मानवीय शास्त्रकारों द्वारा भ्रमित हुए मनुष्य को प्रमाण सहित गीता ज्ञान द्वारा यही आश्चर्यजनक; किंतु सत्य बातें भगवान बता रहे हैं। साक्षात् भगवान द्वारा दिया गया ज्ञान ही ऐसी चीज जो सारे संसार का जीवन परिवर्तन कर सकती है। जैसे जल की कोमल धारा कठोर चट्टान को परिवर्तित कर देती है वैसे ही एक प्यार के सागर ईश्वर का ज्ञान है जो पत्थर बुद्धि मनुष्यों को पारस बना देगा। जो अनेक धर्मों में फँसे हैं, उनको एक धर्म में बाँध देगा। वो ही ऐसी सच्ची स्वतंत्रता देगा जो मन किसी भी प्रकार की दासता को नहीं मानेगा । आज लोग धर्मगुरुओं द्वारा बनाई परम्परागत व्यर्थ धारणाओं पर चल रहे हैं। बिना विचार करते हुए कि मनुष्य 84 लाख योनियों में जाता है, खुदा जर्रे-जर्रे में है, क्राइस्ट ही गॉड का बच्चा है, मनुष्य पुनर्जन्म नहीं ले सकता है इत्यादि। हम कैसे अनेकों को भगवान मानने लगे, एक सार्वभौम प्राचीन मान्यता प्राप्त शिवशंकर की उपासना वाले कैसे कृष्ण आदि देवताओं को मानने लगे? जिनको कभी देखा ही नहीं, सिर्फ़ परम्परागत बिना जाने पूजने लगे। इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, शंकराचार्य या जो भी द्वैतवादी धर्मपिता आए, उनके अनुयायी बन गए और लड़ते-झगड़ते रहे। इतिहास प्रसिद्ध रक्तपात करते रहे। फिर अब कैसे उस एक सर्वोच्च को जानकर एक हो सकते हैं। जो हम सब मनुष्यों की उत्पत्ति का एकमात्र अद्वैतवादी केंद्र है, अंतिम बिंदु भी वही साकार आदम है, एडम है और आदिदेव, आदिनाथ है, जिसमें निराकार शिव ज्योतिर्लिंग प्रवेश करता है। जब उस सर्व आत्माओं के विश्वपिता को पहचान कर

मानेंगे, तभी संसार में एकता स्थापित होगी और ये गायन सिद्ध होगा 'हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई सब आपस में भाई-भाई'। गायन है तो कभी तो प्रैक्टिकल में एक जरूर हुए होंगे।

ॐ शांति